मेहरुन्निसा परवेज़

जन्म	:	10 दिसंबर 1944 ।
जन्म-स्थान	:	बहला, जिला-बालाघाट, मध्य प्रदेश ।
पिता	:	ए० एच० खान ।
अभिरुचि	:	सामाजिक सक्रियता, बस्तर के आदिवासियों और शोषित दलित जातियों-समुदायों की बेहतरी के लिए लेखन तथा अन्य गतिविधियों द्वारा विशेष सक्रियता । म० प्र० की बोलियाँ जैसे हलबी, बुंदेलखंडी, छत्तीसगढ़ी मालवी आदि का अच्छा ज्ञान ।
गतिविधियाँ	:	1995 में चरारे शरीफ में हिंसा के समय गाँधी शांति मिशन की सांप्रदायिक सद्भाव यात्रा में कश्मीर गईं । लंदन, फ्रांस, रूस आदि की साहित्यिक-सामाजिक सद्भाव यात्राएँ और सम्मेलनों में सहभागिता ।
सम्मान	:	'कोरजा' उपन्यास पर म० प्र० सरकार का 'अखिल भारतीय महाराजा वीर सिंह जुदेव' राष्ट्रीय पुरस्कार इसी उपन्यास पर उ० प्र० हिंदी संस्थान का 'साहित्य भूषण' सम्मान । 1995 में लंदन में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में विशिष्ट सम्मान । 2003 में 'भारत भाषा भूषण' सम्मान । 2003 में 'समरलोक' के संपादन के लिए श्री रामेश्वर गुरु पुरस्कार । 2005 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मश्री' अलंकरण आदि ।
संपादन	:	'समरलोक' त्रैमासिक पत्रिका ।
फिल्म निर्माण और निर्देशन	:	'लाजो बिटिया' - टेलीफिल्म तथा स्वतंत्रता संग्राम पर 'वीरांगना रानी अवंतीबाई' नामक धारावाहिक का निर्माण एवं निर्देशन । 'जूठन' तथा 'सोने का बेसर' कहानियों पर दूरदर्शन धारावाहिक बने ।
प्रमुख कृतियाँ	:	आँखों की दहलीज, उसका घर, कोरजा, अकेला पलाश, समरांगण, पासंग आदि (उपन्यास) । आदम और हव्वा, टहनियों पर धूप, गलत पुरुष, फाल्गुनी, अंतिम चढ़ाई, सोने का बेसर, अयोध्या से वापसी, ढहता कुतुब मीनार, रिश्ते, कोई नहीं, अम्माँ, समर, लाल गुलाब, मेरी बस्तर की कहानियाँ आदि (कहानी संग्रह) ।

सन् 1970 के बाद हिंदी की महिला कथाकारों में मेहरुन्निसा परवेज ने धीरे-धीरे अपनी खास पहचान बनाई । वे लगातार सामाजिक-साहित्यिक गतिविधियों के साथ लेखनरत रहीं । उनके कथा साहित्य में मुस्लिम मध्यवर्ग के जीवन के विश्वसनीय अंतरंग चित्र तो मिलते ही रहे, किंतु धीरे-धीरे उन्होंने अपने अनुभवों का दायरा बढ़ाया तथा पर्यवेक्षण का विस्तार किया । फलस्वरूप उनके कथा साहित्य में मुस्लिम मध्यवर्ग और नारी समस्या के अतिरिक्त अन्य विषयों से जुड़ी विविधताएँ भी आई । उन्होंने आदिवासियों और समाज के सामान्य रूप से पिछड़े और तिरस्कृत समुदायों के जीवन पर भी संवेदनापूर्ण दृष्टि डाली तथा अपने

कथानुभव का विस्तार किया ।

मेहरुन्निसा परवेज अपने विषय, पात्र और परिवेश पर खोंजी निगाह रखती हैं । उनकी दृष्टि समाजशास्त्रीय और मानवीय होती है, किंतु गहरी सहानुभूति, संवेदना तथा कल्पनाशील ताने-बाने के कारण उनकी रचनाएँ जिज्ञासा, खोज, शोध या पत्रकारिता की सतह से ऊपर उठकर एक सर्जनात्मक ऊर्जा और मूल्यबोध से दमक उठती हैं । उनकी रचनाओं में भावुकता नहीं होती, किंतु भावना की ताकत यथार्थबोध से जन्मी समझ के कठोर संयम के कारण रचना के दायरे में ही कहीं रूपांतरित होकर एक ऐसी ऊर्जा में, एक ऐसे विचलनकारी उत्ताप में बदल जाती है कि पाठक गहरी तृप्ति या अतृप्ति अनुभव करने लगता है । वह यथास्थिति को बदलने के लिए बेचैन-सा हो उठता है । इस अर्थ में मेहरुन्निसा परवेज का साहित्य समय के निहायत जरूरी संवाद और संप्रेषण का साहित्य हो जाता है । उसकी परख-पड़ताल और पहचान की कसौटियाँ बदल जाती हैं । उसे सिर्फ मुस्लिम मध्यवर्ग, महिला लेखन आदि के चालू निकष और दायरे में पहचानना एक ज्यादती और जबर्दस्ती का काम लगने लगता है ।

मेहरुन्निसा परवेज लगातार लिख रही हैं और अभी उनसे एक-से-एक बढ़कर उत्कृष्ट रचनाओं की उम्मीद बनी हुई है ।

यहाँ प्रस्तुत कहानी उनकी कहानियों की किताब 'मेरी बस्तर की कहानियाँ' से ली गई है । यह छत्तीसगढ़ के एक पिछड़े हुए इलाके में आत्मसम्मान के साथ जिंदगी जीने के संघर्ष में लगे एक बुजुर्ग शायर, उसकी एक खुद्दार बेटी और बच्चों के बारे में बहुत प्रभावोत्पादक ढंग से करीब से हमें बताती है और जितना बयान करती है उससे अधिक इशारों में बताती है ।

◆ ◆ ◆

"कहानी छोटा मुँह बड़ी बात कहती है ।

आज की हिंदी कहानियों में चित्रित संघर्ष चाहे नैतिक हो चाहे आर्थिक, पारिवारिक हो चाहे राजनैतिक, आज की परिस्थिति का संघर्ष है । सदियों पुरानी समस्याओं को भी आज की कहानियों का किसान या निम्न मध्यवर्गीय कोई शहरी व्यक्ति नए स्तर पर तथा नए रूप में झेल रहा है ।"

(कहानी : नई कहानी)

–डॉ० नामवर सिंह

भोगे हुए दिन

भोगे हुए दिन का बासी पहर अब भी बचा था । बदली से सूरज के ढँके होने के कारण शाम का धोखा हो रहा था ।

ताँगा गली के मोड़ पर बने एक पुराने घर के सामने रुका । ताँगे में बैठे-बैठे ही मैंने शांदा साहब को पहचान लिया । वह नीम के पेड़ के नीचे कुर्सी पर बैठे थे । मुझे देखते ही उनका बूढ़ा शरीर प्रसन्नता से खिल उठा । वह एकदम मेरी तरफ बढ़े और मुझसे लिपट गए ।

''तो बरखुरदार, इस बूढ़े की याद आ ही गई,'' उनका चेहरा प्रसन्नता से भरा था । वह एकदम पलटे, और आवाज दी, ''अरे बेटा जावेद आओ तो !''

दरवाजे पर टँगा परदा हिला, और एक दस साल का लड़का बाहर आया ।

''देखो बेटा, यह सूटकेस मेरे कमरे में रख दो ।''

ताँगे वाले के जाते ही हम आगे बढ़े । सामने लकड़ियों का ढेर पड़ा था, और एक आम के पेड़ के नीचे बड़ा-सा तराजू लटक रहा था । तराजू के पास एक आठ साल की लड़की बैठी थी जिसने बहुत गंदे कपड़े पहन रखे थे । उसकी चोटी से बाल निकलकर सारे मुँह पर बिखरे थे । इतने पर भी वह सुंदर लग रही थी । तराजू के एक पल्ले पर धूप थी, दूसरे में आम की परछाई पड़ी थी । आम की परछाई वाला पल्ला नीचे था, मानो धूप और परछाई दोनों को तौला जा रहा हो ।

हम लोग लंबे और सूने बरामदे को पार कर रहे थे । शांदा साहब लकड़ी के सहारे चल रहे थे । उनका शरीर बहुत भारी था । बुढ़ापे का बोझा उठाने में उनके कंधे असमर्थ थे । दालान का सीमेंट बहुत पुराना था, और जगह-जगह से उखड़ा हुआ था । पूरे मकान को एक अजीब तरह की उदासी ने घेर रखा था, वैसे ही, जैसे अक्सर मुसलमानों के पुराने घरों में होती है ।

कमरे में जाते ही सामने के दरवाजे से आँगन का पूरा भाग सामने आ गया । कुएँ के पास एक बूढ़ी औरत कपड़े धो रही थी । मुझे समझते देर नहीं लगी कि यह शांदा साहब की पत्नी हैं । तपाक से मैंने सलाम किया । मुझे देखते ही वह घबरा-सी गई और बिना कुछ कहे बावर्चीखाने की तरफ बढ़ गई, जो वहीं, लकड़ी की जाफरी का बना हुआ था ।

शांदा साहब मुस्कराए, ''अरे बेगम, यह तो अपना जगदलपुर वाला शमीम है जहाँ पिछली गर्मियों में मैं मुशायरे में गया था ।''

पर वह नहीं निकलीं । कमरा छोटा-सा था । इस कमरे से लगा एक और कमरा था, और उसकी दाहिनी ओर एक और कमरा था । वहीं लकड़ी की सीढ़ी ऊपर को गई थी । यह कमरा शांदा साहब का था । कमरे के बड़े भाग को तखत घेरे हुए था । दीवारों में बनी आलमारियों में देशी दवाएँ भरी थीं । एक पुराने सींग में एक सफेद रंग की गोल अजमेरी टोपी टँगी थी । एक तिपाई पर मेरा सूटकेस रखा था ।

शांदा साहब बाहर चले गए थे । सूटकेस से मैंने अपने कपड़े निकाल लिए । और मुँह धोने किधर जाऊँ सोच ही रहा था कि जावेद आया ।

"चलिए, गुसलखाना उधर है ।"

मैं जावेद के दिखाए, टट्टे के बने बाथरूम में चला गया जहाँ खड़े रहने पर आधा शरीर बाहर दिखता था । मैंने देखा, पीछे दालान सूनी है । कुएँ के पास टमाटर के कुछ पौधे लगे थे, जिनमें कच्चे-कच्चे टमाटर लटक रहे थे । बाथरूम का पानी एक कच्ची नाली से दीवार के पार जा रहा था जहाँ शायद दो-तीन बत्तखें पानी पी रही थीं । उनकी मोटी और भद्दी आवाज आ रही थी ।

मैं वापस कमरे में आया तो एकदम सामने से शांदा साहब आते दिखे । उनके एक हाथ में आठ आने वाली गुलाब छाप चाय की पुड़िया थी । मुझे देखते हुए पाकर वह झेंपे, फिर जल्दी से अंदर हो गए ।

तराजू के पास बैठी लड़की तौल-तौल कर लकड़ियाँ दे रही थी । लकड़ियों के ढेर पर चढ़े बकरी के छोटे-छोटे बच्चे दौड़ रहे थे । मुझे घर के घुटे-घुटे वातावरण से अजीब लग रहा था ।

जावेद मेरे सामने से निकला और लड़की के पास गया ।

"सोफिया, आठ आने दे, नानी बोली है ।"

"क्यों ?" लड़की ने अपनी जेब को कसकर पकड़ लिया, ताकि जावेद जोर-जबर्दस्ती से न ले जा सके ।

"कमरून खाला के यहाँ से दो अंडे लाने हैं, शाम की तरकारी के लिए, ला जल्दी दे ।"

लड़की ने जेब से आठ आने निकालकर दे दिए । जावेद चला गया । मैं लड़की के पास आ गया । गली में काफी चहल-पहल थी । घर के सामने औरतें, आदमी बैठे बीड़ी बना रहे थे । महाराष्ट्र में बीड़ी के काम से काफी लोग घर-बैठे कमा लेते हैं । यह एक ऐसा धंधा है कि अच्छे-अच्छे घर की औरतें पैसों की तंगी से घर में बीड़ी बनाती हैं । महाराष्ट्र में यह धंधा जितना अधिक है उतना कहीं नहीं । बीड़ी के कटे हुए पत्तों का ढेर जहाँ-तहाँ पड़ा था ।

शांदा साहब की एक ही विधवा लड़की है, जो पति के मरने के बाद उन्हीं के पास अपने दोनों बच्चों के साथ रहती है । उनकी लड़की प्रायमरी उर्दू स्कूल में टीचर है । उसी लड़की के ये दोनों बच्चे हैं ।

लड़की मुझे पास खड़ा देख शरमा रही थी । मैं एकदम उसके पास चला गया । वह मुँह में फ्रॉक दबाए हँसने लगी ।

"क्या नाम है ?"

"सोफिया ।"

"बड़ा प्यारा नाम है । कितनी बिक्री हुई ?"

सोफिया झेंपकर नीचे देखने लगी ।

"पढ़ती नहीं हो ?"

"अम्माँ घर में पढ़ा देती हैं ।"

"और जावेद ?"

"वह जाता है, तीसरी में पढ़ता है ।"

तभी सामने से दो बच्चे लकड़ी लेने आए । सोफिया बड़े ही सधे हाथों से तराजू पर लकड़ियाँ चढ़ा रही थी । मुझे आश्चर्य हो रहा था, सात साल की लड़की को भी समय ने कितना निपुण बना दिया था ।

मैने शांदा साहब के घर के इस वातावरण के बारे में सोचा न था । हम लोगों ने पिछली गर्मियों में मुशायरा रखा था । शांदा साहब को उसी मुशायरे में अध्यक्ष की हैसियत से बुलाया था । शांदा साहब के बहुत बुजुर्ग होने से दूसरों के साथ तकलीफ न हो, सोच मैंने उन्हें अपने घर पर ठहराया था । तभी से मैं इनके बहुत पास आ गया । शांदा साहब हिंदुस्तान के सबसे पुराने शायरों में से हैं । इकबाल और इनका बहुत दिनों का साथ रहा है । मैंने तो सोचा भी न था, कि जिसके नाम से लोग जमा हो जाते हैं, जो उस्ताद माना जाता है, उसके घर का वातावरण इतना करुणाजनक होगा ।

अंदर कमरे से जावेद मुझे बुलाने आया । अंदर शांदा साहब आराम कुर्सी पर बैठे थे ।

"बैठो शमीम ।"

सामने के दरवाजे से जावेद चाय और नाश्ते की प्लेट उठाकर लाया । नाश्ते को एक नजर देखते हुए शांदा साहब बोले, "जावेद नानी से कहो, वह कश्मीर वाले अखरोट भेजें ।"

जावेद अंदर गया । अंदर शायद पहले ही सुनकर अखरोट निकाल लिए गए थे, क्योंकि जावेद उसी पल अखरोट से भरी प्लेट लिए लौट आया ।

"लो शमीम, यह अखरोट खाओ । मेरा एक शागिर्द है, जम्मू में, बेचारा वही भेजता रहता है । वरना मेरी तो इन सब चीजों के खरीदने की हैसियत ही नहीं है ।"

"इन दिनों आप कहीं मुशायरे में नहीं गए ?" मैंने अखरोट उठाते हुए पूछा ।

"नहीं, कहीं से तो बुलावा नहीं आया है । फिर शमीम, बूढ़ा ज्यादा हो गया हूँ । लोग बुलाते नहीं । शमीम बेटा आजकल तो गलेवालों की ज्यादा पूछ है; जो अच्छा गाकर पढ़ लेता है, उसी की पूछ है ।"

''फिर खर्च तो बड़ी मुश्किल से चलता होगा !''

''अहँ ! लड़की कमाती है । लकड़ी की टाल बनवा लिया हूँ । फिर इसी साल से गौर्मेंट सौ रुपया वजीफा देने लगी है ।''

''वजीफा मिलने लगा ?'' मुझे मालूम था इसके लिए शांदा साहब दिल्ली जाते रहते थे ।

''हाँ बड़ी मुश्किल से मिल रहा है । एक बार कश्मीर के मिनिस्टर मुझसे मिलने घर पर आए थे, मेरी हालत देखकर उन्होंने कोशिश की तो इस साल से मिल रहा है । बेटा, हम लोगों पर खर्च करना गौरमेंट फिजूल समझती है । बस, खुदा किसी तरह से पूरा कर रहा है,'' शांदा साहब फिर बोले – ''अरे बेटा, यूनानी दवा मैं बहुत पहले से देता था । सब पुराने लोग जानते हैं तो इलाज करवाने आते हैं, पर वह भी बहुत कम । मशीनों के जमाने में जड़ी-बूटी को कौन पूछता है !''

दोपहर को शांदा साहब की लड़की फातमा स्कूल से लौट आई । सूखा-सूखा मास्टरनियों का-सा चेहरा ! उसके हाथ में लाल गुलाब के तीन फूल थे, जिन्हें उसने आते ही गुलदान में लगा दिया ।

जावेद स्कूल चला गया था । सोफिया अंदर जाकर जावेद की ड्यूटी सँभाल रही थी । और शांदा साहब सोफिया की जगह टाल में थे । वह कुर्सी पर बैठे बकरी के बच्चों से खेल रहे थे । उनकी पीठ पर लगा छोटा-सा पेबंद धूप में साफ चमक रहा था । उनके पैर बुरी तरह कटे थे । उन्होंने काले रंग की रबर की दो तरफ से सूराख वाली पुरानी-सी चट्टी पहन रखी थी ।

दोपहर के खाने के बाद मैं भी लेट गया । सोफिया आँगन की तरफ खुलने वाला दरवाजा बंद करने आई थी । उसके छोटे-छोटे बाल धुले हुए पीठ पर बिखरे थे । कपड़े भी धुले हुए थे । सोफिया दरवाजा बंद करने लगी । मैंने जान-बूझकर आँखें मूँद लीं । दरवाजा धीरे-से लगाकर सोफिया टाल में चली गई । आँगन में बरतनों के निकालने की आवाज आई । तो वे लोग दरवाजा लगाकर बरतन माँज रही हैं ?

सोफिया के बाहर जाते ही शांदा साहब लकड़ी के सहारे आते दिखे । कमरे में आते ही वह खाट पर थके-से लेट गए । सामने दीवार पर धूप की परछाई पड़ रही थी । सामने से सोफिया की आवाज आ रही थी, शायद वह बकरियों के बच्चों को पकड़ रही थी । मैं चुपचाप बैठा कल जाने की सोच रहा था । इन दो दिनों में मेरा मन इस घर से इतना लग गया था कि जाने की बात से ही मन में पीड़ा घुलने लगी ।

''रायपुर के लिए ट्रेन कब मिलती है ?''

शांदा साहब ने छत की तरफ देखते हुए ही कहा –''शायद कल दस या ग्यारह बजे मिल जाएगी, '' वह चुप हो गए । गली से शायद कोई ताँगा जा रहा था । सामने वाले कमरे की दीवार से जो गली की तरफ पड़ती है, शायद कोई गाय पीठ रगड़ रही है, उसकी खस-खस की आवाज

यहाँ साफ सुनाई दे रही थी ।

"शमीम मुझे अफसोस है, तुम्हारे लिए कुछ न कर सका । वक्त बहुत ही बुरा आ गया है, वक्त के साथ कमाई के जरिए कम हो गए हैं, और महँगाई दुगुनी हो गई है । हम लोग तो और नंगे हो गए हैं । बेटा, मैंने अपनी इन आँखों से दो दौर देखे हैं । एक वह वक्त, जब मेरे नाम से दूर-दूर से लोग आते थे । एक-एक शेर को हजारों बार पढ़वाया जाता था । रेडियो वाले मेरा प्रोग्राम रिकॉर्ड करने दौड़ते थे । दिल्ली और मुंबई के लोग मेरे पीछे पागल-से थे । दूसरा वक्त अब देख रहा हूँ, यही लोग जो मेरे दीवाने थे, अब मुझे भूल गए हैं । दिल्ली-मुंबई की तो छोड़ दो, खुद नागपुर में मुशायरे होते हैं तो मुझे बुलाया नहीं जाता । अब तो सिर्फ पुराने दो-चार लोग हैं जो मुझे शायर के नाम से जानते हैं, वरना यह नई नस्ल तो मेरा नाम तक नहीं जानती ।" शांदा साहब चुप हो गए थे ।

मुझे लगा, शायद उनका गला भर आया है । तभी वह उठे और दूसरे कमरे में से एक छोटी-सी संदूक उठा लाए जिसमें ढेरों कागज भरे थे । चश्मा चढ़ांकर वह एक-एक खत को उठाते जाते और मुझे पढ़ने को कहते । ये सब खत इकबाल के थे । पढ़-पढ़कर हैरान हो रहा था । सब पुराने शायर इन्हें कितना मानते थे । हर खत पढ़कर मैं आश्चर्य में पड़ गया ।

"शमीम, ये सब पुराने शायर मुझे मानते थे, इनके हर शेर में मैं गलतियाँ निकाला करता था । पर देखो नसीब की बात, आज मरने के बाद भी यह पूछे जाते हैं, और मैं जिंदा खप रहा हूँ, मेरी अभी तक एक भी किताब नहीं निकली, क्यों ? इसलिए शमीम कि ये लोग वक्त पर मर गए । शायर को उस वक्त मर जाना चाहिए जब लोग उसे पसंद करते हों, दीवाने हों ।"

सारी दुपहरी शांदा साहब पुरानी बातें बताते रहे । मैं बाद में सो गया था, पर मुझे लगा, शांदा साहब व्याकुलता से करवटें ही बदलते रहे । पुरानी बातें उन्हें पीड़ा दे रही थीं ।

तीन बजे जब मैं शहर से ट्रेन का टाइम वगैरह पूछकर और कुछ सामान खरीदकर लौटा तो शाम होने वाली थी । जावेद स्कूल से आ गया था, और पायरी पर बैठा अमरूद खा रहा था । सोफिया दालान झाड़ रही थी । तराजू खाली लटक रहा था । बकरी के बच्चे मुझे कहीं नहीं दिखे, शायद सोफिया ने उन्हें कोठे में बंद कर दिया था https://www.evidyarthi.in/

मैं दालान पार कर कमरे में गया तो आँगन की तरफ खुलने वाला दरवाजा बंद था । मैं तख्त पर बैठ गया । जाने मन की कौन-सी इच्छा मुझ पर सवार हो गई । और मैं अपने को रोक न सका । उठा और बंद दरवाजे को दराज से झाँकने लगा । मैं चौंक पड़ा, शांदा साहब पैजामा घुटनों तक चढ़ाए बहुत धीरे-धीरे, लड़खड़ा-लड़खड़ाकर बाल्टी से पानी लाकर भर रहे थे । उनका सारा शरीर पसीने से भींगा था और वह बुरी तरह हाँफ रहे थे ।

मैं चकराया-सा पलटा तो स्तब्ध रह गया । मेरे पोंछे झाड़ू लिए भयभीत सोफिया खड़ी थी । उस सात साल की बच्ची की उन आँखों में मैंने बहुत सारी बातें पढ़ ली थीं । मैं एकदम घबरा गया और जल्दी से बाहर आ गया ।

जावेद लकड़ियाँ तौल रहा था । मैं वहीं पड़ी कुर्सी पर बैठ गया । तभी बाहर के दरवाजे से उसकी माँ आई और जावेद को पुकारकर छाता और पर्स देकर उल्टे पाँव वापस चली गई । मैंने प्रश्नसूचक दृष्टि से जावेद की ओर देखा ।

"मामू जान, अम्माँ स्कूल से रोज ऐसे ही लौटकर बिना घर में घुसे ट्यूशन पढ़ाने चली जाती हैं । अब वह रात को नौ बजे लौटेंगी, तब खाना खाएँगी । अम्माँ को लेने रोज मैं यहाँ से जाता हूँ ।"

मुझे अजीब लग रहा था । मन में प्रसन्नता भी हो रही थी कि इस घर का हरेक प्राणी, एक-एक क्षण को जीना जानता है । जावेद अंदर चला गया, लौटा तो गेहूँ का पीपा उठाए आया । वह गेहूँ पिसाने चक्की पर जा रहा था ।

मेरे जाने के समय जावेद विदाई देने रुका रहा, पर जब स्कूल को देर होने लगी तो मुझसे हाथ मिलाकर चला गया । सोफिया बाल बिखराए हुए तराजू के पास बैठी बकरी के बच्चे को निहार रही थी । शांदा साहब विदा देते समय दुखी से लगे – शायद अपनी हालत पर या मेरे जाने पर !

ताँगा जब आगे बढ़ने लगा तो मुझे तराजू और उसके पास बैठी सोफिया दिख रही थी । और मैं सोच रहा था – अगर आज इकबाल होते तो !

□□□

अभ्यास

पाठ के साथ

1. जावेद और सोफिया इस कहानी के प्रमुख पात्र हैं । इनका परिचय आप अपने शब्दों में दें ।
2. पुरानी बातें शांदा साहब को क्यों पीड़ा दे रही थीं ?
3. कहानी में शमीम की भूमिका का वर्णन अपने शब्दों में करें ।
4. 'शायर को उस वक्त मर जाना चाहिए जब लोग उसे पसंद करते हों, दीवाने हों ।' इस कथन के मर्म को अपने शब्दों में उद्घाटित करें ।
5. 'हमलोग तो और नंगे हो गए हैं । बेटा मैंने अपनी इन आँखों से दो दौर देखे हैं ।' इस कथन का आशय स्पष्ट करते हुए बताएँ कि यहाँ किन दो दौरों की चर्चा है ।
6. 'और मैं सोच रहा था – अगर आज इकबाल होते तो !' इस कथन का क्या अभिप्राय है ? अगर आज इकबाल होते तो क्या होता ! अपनी कल्पना से उत्तर दें ।
7. कहानी के शीर्षक 'भोगे हुए दिन' की सार्थकता पर विचार करें ।

8. जावेद विद्यालय जाता है, पर सोफिया नहीं । क्यों ? क्या यह सही है ? कहानी के संदर्भ में अपना पक्ष रखें ।
9. 'भोगे हुए दिन' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखें ।
10. 'सात साल की लड़की को भी समय ने कितना निपुण बना दिया था ।' इस पंक्ति की सप्रसंग व्याख्या करें ।
11. 'इस घर का हरेक प्राणी एक-एक क्षण को जीना जानता है ।' इस कथन का क्या अर्थ है, स्पष्ट करें ।
12. 'तराजू के एक पल्ले पर धूप थी, दूसरे में आम की परछाई पड़ी थी । आम की परछाई वाला पल्ला नीचे था, मानो धूप और परछाई दोनों से तौला जा रहा हो ।' यह एक बिंब है । इसका अर्थ शिक्षक की सहायता से स्पष्ट कीजिए ।

पाठ के आस-पास

1. शांदा साहब के परिवार में बीड़ी बनाने का काम होता है । क्या आपके पड़ोस में भी यह काम होता है ? अपने आस-पड़ोस के ऐसे परिवारों के बारे में मालूम करें और उनकी आर्थिक स्थिति पर अपना एक सर्वेक्षण कक्षा में प्रस्तुत करें ।
2. मुशायरा का आयोजन किस प्रकार होता है ? इस संबंध में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें । अपने विद्यालय में भी एक मुशायरे का आयोजन करें https://www.evidyarthi.in/
3. सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा' - किनका लिखा तराना है ? तराना किसे कहते हैं ? शिक्षक से मालूम करें ।
4. इकबाल कौन थे ? उनके बारे में अपने शिक्षक से मालूम करें और उन पर विद्यालय में एक परिचर्चा का आयोजन करें ।
5. आपके आस-पास कोई शायर है ? उसकी आर्थिक-सामाजिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करें ।
6. इस कहानी का नाट्य रूपांतर करके उसका मंचन करें ।
7. इस कहानी में अपनी गरीबी से लड़ते हुए एक परिवार का चित्रण है । अपने आस-पास के ऐसे परिवार की खोज कर उसकी गरीबी और संघर्ष का चित्रण करते हुए एक कहानी लिखें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित वाक्यों में मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य चुनें तथा उन्हें सरल वाक्य में बदलें –
   (क) जावेद मेरे सामने से निकला और लड़की के पास गया ।
   (ख) मैंने देखा, पीछे की दालान सूनी है ।
   (ग) मेरा एक शागिर्द है, जम्मू में, बेचारा वही भेजता रहता है ।
   (घ) जावेद अंदर चला गया, लौटा तो गेहूँ का पीपा उठाए आया ।
2. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य-प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करें –
   गहरी साँस लेना, नंगा होना, गला भर आना, करवटें बदलना
3. इस पाठ से मुहावरों का सावधानी से चयन करें और उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करें ।

4. पाठ से अव्यय शब्दों का चुनाव करें और उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करें ।

शब्द निधि

बासी	:	जो ताजा न हो
बरखुरदार	:	खुशनसीब, बेटा
दालान	:	बरामदा
बावर्चीखाना	:	रसोईघर
जाफरी	:	बाँस या लकड़ी से बनी हुई टट्टी
मुशायरा	:	कवि सम्मेलन
तखत	:	चौकी
खाला	:	मौसी
गुसलखाना	:	स्नानघर
निपुण	:	दक्ष
उस्ताद	:	गुरु
शागिर्द	:	शिष्य
पेबंद	:	वह टुकड़ा जिससे कपड़े के छेद को ढँका जाए
अफसोस	:	दुख
स्तब्ध	:	भौंचक्का
सूराख	:	छेद
चट्टी	:	सस्ती चप्पल
वजीफा	:	पेंशन
गुलदान	:	वह पात्र जिसमें तरह-तरह के फूल सजाए जाते हैं